अध्याय ग्यारहवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढाय नमः॥

"जो स्वयं के शरीर का अभिमान त्याग देते हैं, जो देहावस्था अथवा ब्रह्मस्थिति इन दोनों स्थितियों में अपार कष्ट सहते हैं, जो प्राप्त हुआ आत्मज्ञान अपने आचरण व्दारा प्रकट करते हैं, ऐसे ये सतगुरु महाराज लोगों को हमेशा बोधामृत प्राशन कराते है।"

जिनके आचरण से ही लोगों को बोधन होता है, जिनके वचनों का अनुसरण करने से भवबंधन टूट जाते हैं, ऐसे यह यतिवर्य सतगुरु सिद्ध सबके साथ सुख से पृथ्वी पर रहते हैं। दुष्ट अगर उन्हें कष्ट पहुँचाए तो अत्यंत शांति से वे उन से व्यवहार करते हुए शरीर का दुख ये मन का सुख है ऐसे अपने आचरण से लोगों को दिखाते थे। ऐसे ये सिद्धनाथजी विविध प्रकार के उपाय करते थे जिनके कारण भवनदी पार करने में लोगों की सहायता होती थी। पिछले अध्याय में, सिद्धारूढ़जी विजापुर में एकांत और निःसंग स्थिति में बैठे हुए देखकर साधारण मनुष्यों को आश्चर्य होने की कथा बयान की थी। कुछ दिनों के बाद विजापूर में ही, मुहर्रम के त्योहार के दिन कुछ बदमाश और नटखट लोगों ने सिद्धनाथजी को लकड़ी के एक पल्लेपर बिठाया। दिनभर उन्हें उस पल्लेपर बिठाकर और पल्ला कंधोंपर उठाकर घर घर जाकर पैसे कमाने का उन लोगों ने धंदा ही शुरु किया। एक पलभर भी अगर सिद्धनाथजी पल्ले से उतरे तो वे दुष्ट लोग उन्हें पीटते थे, जिससे उनके जाँघ तथा पिंडरें घायल होकर फूल गये। उसके बाद वे दुष्ट और निर्दय लोग उन्हें वही पर छोड़कर चले गये। उस घायल स्थिति में वेदना के कारण सिद्धजी चल नहीं पा रहे थे, फिर भी किसी तरह चलते हुए एक मस्जिद में आकर लेट गये और बोले की ईश्वर ने मुझ पर बड़ा उपकार ही किया है। जगह जगह घूमने से अज्ञानवश मन की एकाग्रता भंग होती है, लेकिन एक ही जगह निवास करने से निर्विकल्प स्थिति प्राप्त होती है। इस स्थिति में उन्होंने कुछ दिन बिताये। ईश्वर ने उन्हें वही अन्नजल पहुँचाया। वहाँ छोटे बच्चे आते थे और सतगुरुजी उनके साथ खेलते थे। उन बच्चों के साथ सिद्धजी गेंद, लट्टू लेकर खेलते थे या पतंग उड़ाते थे और सबके साथ प्रेम से रहते थे, इसलिए उन बच्चों को भी सिद्धजी के साथ खेलने में आनंद आता

था। वहाँ अवधूत होने की खबर मिलने के उपरांत तुलजप्पा नाम का एक भक्त उनके दर्शन करता था और प्रणाम करके विनम्रता से खड़ा होता था। भावभक्ति से सिद्धजी के दर्शन लेकर उसे हर्ष होता था, तब वह मन में कहता था की अगर मैं इस महात्मा की संगत कर सकूँ, तो मैं धन्य हो जाऊँगा। उसने बच्चों से कहा की अगर वे सिद्धजी को खेल में उलझाकर उसके घर ले आएंगे तो वह उन्हें खाने के लिए चने गुड देगा। ये सुनते ही दस पंद्रह बच्चे इकट्ठा हुए और सिद्धजी के साथ गेंद खेलते खेलते उन्हें तुलजप्पा के घरतक ले गये। तुलजप्पा बाहर आया और बडे प्रेम से सिद्धारूढ़जी का हाथ थामकर उन्हें घर के अंदर ले जाकर मंचक पर बिठाया। सभी बच्चों को चने गुड देकर भेज दिया और गली के सभी सद्भक्तों को बुला लाया। सिद्धारूढ़जी को घर के बाहर ले आकर उनकी हजामत बनायी और स्नान के पश्चात उन्हें पकवानों का भरपेट भोजन खिलाकर, मुलायम बिस्तरपर सुलाया। प्रतिदिन वहाँ अनेक सद्भक्त आते और वेदांत विषयपर चर्चा करते थे, सिद्धारूढ़जी उनके आध्यात्मिक संदेहों का पलभर में निरसन करते थे। सिद्धनाथजी ब्रह्मज्ञानी है नगर में चारो ओर फैलने के कारण जिज्ञासु लोग उन्हें मिलने हेतु आने लगे। तब सिद्धारूढ़जी ने तुलजप्पा से कहा, "जैसे मुक्त होकर उड़ने वाले किसी पंछी को पिंजरे में बंद कर दिया जाता है, उसी प्रकार तुमने मुझे बंधन में रख दिया है, इसलिए मेरा मन यहाँ नहीं लगता। इसलिए मुझे फिर एक बार उस मस्जिद में ले जाकर छोड़ दे।" तुलजप्पा सच्चा भक्त होने के कारण उसने उन्हें फिर मस्जिद में ले जाकर छोड़ दिया। ये अद्भुत समाचार सुनकर लोग वहीं जाकर उनके दर्शन करने लगे| ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वकिल, थानेदार तथा तहसीलदार आदि सभी प्रकार के लोग सिद्धारूढ़जी के दर्शन करने आने लगे और उनसे वार्तालाप करके सुखी होने लगे| जिन्होंने सिद्धनाथजी को विविध प्रकार के कष्ट दिये, वे भी उनके दर्शन करने आए और पश्चात्ताप करके विनम्रता से उनकी शरण में गये। अगर घर में किसी को कुछ बीमारी हो, तो उस रोगी को सिद्धारूढ़जी के पास ले जाते थे और उनके केवल रोगी के मस्तक को स्पर्श करने से, रोगी की पीडा पूर्ण रूप से नष्ट होती थी। एक दिन सिद्धारूढ़जी मैदान में बैठे थे की वहाँ सभी जाति के लोग इकट्ठा हुए और हरएक अपनी जाति की श्रेष्ठता के बारे मे वादविवाद करने

लगे। उन लोगों ने अपना वादपद सिद्धजी के सामने प्रस्तुत किया। सिद्धारूढ़जी ने कहा, "जिस प्रकार ईश्वर एक ही है परंतु उसे प्राप्त करने के अनेक मार्ग हैं, जैसे एक ही गाँव पहुँचने के लिए कई मार्ग होते हैं। उसी प्रकार ईश्वर के पास पहुँचने के लिए कई प्रकार की विचारधाराएँ हैं। ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का लक्ष्य यह सभी जीवात्माओं के लिए एकसमान है, यह एक निर्विवाद सत्य है।" उनकी बातें सुनते ही सभी ने वादविवाद छोड़ दिया और उन्हें प्रणाम करके वे चले गये। इस प्रकार कुछ समय विजापुर में बिताकर सिद्धजी फिर एक बार संचार करने निकले, तब सभी गाँववालों ने प्रार्थना की, "सतगुरु महाराज, अगर आप यहाँ से चले गये, तो हमें इस भवसागर के पार लगानेवाला कौन है? अगर हमें आपके प्रतिदिन दर्शन हुए तो हम धन्य हो जायेंगे।" उनकी प्रार्थना सुनकर यतिवर्य ने कहा, "हे सद्भक्तों, सुनो। आप सभी लोगों ने ज्ञान का प्राप्त किया है, आगे चलकर उसे अंकुर उगेगा। आपने उस बीज को अपने हृदय में बोया है और सदाचरण से उसकी रक्षा की है। भक्तिपूर्ण कर्म करके उसका पालन किया है तथा आत्मा की ध्यानधारणा करके उसका पालनपोषण किया है| इस प्रकार श्रेष्ठतम उपासना करने से आप को उत्तम गति प्राप्त होगी, जिससे इस संसार में होनेवाली लोभ, सुख, दुख, माया, मोह आदि सभी विपत्तियों का विनाश होगा और ब्रह्मप्राप्ति आसान होगी। अब अन्य स्थानों पर अनेक जीवात्माएँ मेरी ही राह ताक रहने के कारण, उनको बोधित करने हेतु, ये शरीर उनके पास जा रहा है। जिस प्रकार आपने मेरी आदरपूर्वक सेवा की, उसी प्रकार सभी साधुमहात्माओं की सेवा करते रहोगे तो आपका कल्याण होकर आपको शांति प्राप्त होगी।" उनका यह प्रेमपूर्ण भाषण सुनकर सभी भक्तजनों के आँखों से प्रेमाश्रु झरझर बहने लगे, गला रुंधने से वे एक भी शब्द बोल नहीं पा रहे थे। दयालु सद्गुरुनाथजी ने उन्हें आश्वासित करते हुए कहा, "कुछ समय के लिए मैं समीप के एक गाँव में रहूँगा।" ऐसा कहकर सिद्धजी वहाँ से दक्षिण दिशा की ओर चल पड़े। केवल भिक्षा माँगने हेतु वे गाँव में प्रवेश करते अन्यथा वन में भटकते रहते थे। वहाँ वे चरवाहों के साथ खेलते थे। जीवन्मुक्त होने का सुख प्राप्त करने के लिए सिद्ध लोगों की संगति छोड़कर, नि:संग मन से आनंदित होकर चलते जा रहे थे। वे सिद्धापुर नाम के गाँव पहुँच गये। वहाँ उन्होंने एक

आश्चर्य देखा। उन्होंने एक जंगम (वीरशैव पंथ के संन्यासी लोगों को जंगम कहते है) हठयोगी (शरीर को विविध प्रकार के कष्ट देकर योग की उपासना करना इसे हठयोग कहते है) को जमीनपर हाथ टेककर पैर उपर उठाये हुई स्थिति में देखा। सिद्धारूढ़जी ने उसे ऐसा वह क्यों कर रहा है ये पूछते ही उसने कहा, "सुन, मैं ने एक प्रतिज्ञा की है| जब इस गाँव के नागरिक मिलकर एक हजार जंगमों की पूजा करेंगे, तभीं मैं पैर जमीन पर रखूँगा, वर्ना ऐसी ही स्थिति में रहूँगा।" जंगम भूखा होते हुए, वे कैसे भोजन कर सकते हैं इस विचार से तडपते हुए गाँववालों को देखकर, सिद्धजी के मन में दया उत्पन्न हुई। सिद्धनाथजी ने गाँववालों को कहा, "आप सब लोग मिलकर, सहस्त्र जंगमों की पूजा करने का उसे वचन दीजिए। उसे मैं समझाता हूँ।" सिद्धनाथजी की बात सुनकर वे सब आनंदित हुए और उन्होंने मिलकर सहस्त्र जंगमों की पूजा करने का उसे वचन दिया। ये सुनते ही जंगम जमीनपर पैर लगाकर नीचे बैठ गया। सिद्धारूढ़जी ने उसे कहा, "इस जगत में सभीं जंगम हैं, ऐसा होते हुए, तुम किस को भोजन अर्पण करना चाहते हो? अगर तुम कहोगे की जगत में कुछ ही जंगम है, तब मैं कहूँगा की हो सकता है की वे षड्रिपुसहित (षड्रिपु: काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) या षड्रिपुरहित हो सकते हैं। अगर वह जंगम षड्रिपुसहित है, तब वह बद्ध (भवपाशों से बद्ध, जैसे साधारण मनुष्य होता है) होने के कारण, पूज्य नहीं हो सकता। जो जंगम षड्रिपुरहित है, वह हमेशा संतुष्ट (तृप्त) होता है, अब बता, क्या ऐसे जंगम को नैवेद्य की कोई आवश्यकता है?" उनका यह शास्त्रोक्त भाषण सुनकर वह जंगम पूर्णत: से निरूत्तर हो गया। तब उसे सिद्धारूढ़जी ने एकांत में ले जाकर कहा, "अरे भैया, इस प्रकार का दाँभिक व्यवहार छोड़ दो। अगर लोगों को तुम्हारी सच्चाई का ज्ञान हुआ तो तुम्हारी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी।" उनकी बातें सुनकर जंगम दंग रह गया। बाद में उन्होंने दूध और शक्कर मँगवाकर जंगम को दिलाई। दयालु सिद्धजी ने लोगों से कहा, "सारे जगत में जंगम हैं। इस जंगम को संतुष्ट करना ये सभीं जंगमों की पूजा करने के बराबर है, इसलिए अब आप चिंतारहित होते हुए, लौटकर अपने अपने कामपर लग जाईए।"

उसके बाद सिद्धारूढ़जी हर्षित होकर निकल पड़े और संचार करते हुए यादवाडा नाम के गाँव पहुँचे। वहाँ भिक्षा माँगने हेतु वे किसी के घर जाने के बाद, उस घर की गृहणी ने उन्हें एक भाकरी दी। उस भाकरी पर थोडा सा साग था। उसे देखकर सिद्धजी बोले, "माई, भाकरी पर साग नहीं है।" उसपर उस महिला ने वही साग पूरी भाकरी पर चुपड़ा, तब सिद्धजी ने कहा, "अब भाकरी कहाँ से तोडू?" ये सुनकर वह महिला हँसते हुए बोली, "निश्चित ही यह पगला है। साधारण मनुष्य की दृष्टि से पागलों जैसा व्यवहार (उन्मत्त - चर्या) करने वाला होते हुए, ब्रह्मानंद में लीन होकर घूमता है।" वह भाकरी उसी प्रकार हाथ में ही पकड़े हुए, अल्लमय्या नाम के सज्जन के घर में पुराण कथा पर प्रवचन चलता हुआ देखकर वे उसके घर गये| उनकी उन्मत्त चर्या (व्यवहार) देखकर प्रवचनकर्ता ने श्रोतागणों को कहा इस भवी (वीरशैव अथवा लिंगायत पंथ के अनुसार व्यवहार न करनेवाले को भवी कहते है) को बाहर निकाल दो।" परंतु लोगों की परवाह किये बगैर सिद्धजी वहीं रहें। तब प्रवचन फिर से शुरु हुआ। चन्नबसवा (चन्नबसवा अथवा चन्नबसवण्णा ये श्रीबसवेश्वर यानी बसवण्णाजी की बहन नागलांबिका के पुत्र थे; वीरशैव अथवा लिंगायत पंथ के प्रसार में इन्होंने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया) की कथा पर प्रवचन हो रहा था। ईश्वर की पच्चीसवी लीला में अंधकासुर के साथ होने वाली शत्रुता का कथन हो रहा था। कथा का वर्णन करते समय उपमा और अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया था। कथा में बयान किया था की आम का पेड़ हाथी के समान था और भगवान श्रीशिवजी उसके सामने बैठकर तपस्या कर रहे थे। उस पेड़ पर मधु तथा मित्र नाम के दो पंछी एक दूसरे से बातें कर रहे थे। उस समय सिद्धनाथजी ने अचानक 'विद्युलता' नाम का शब्द सुना। तब उन्होंने प्रवचनकार से पूछा, "इस बयान का और विद्युलता शब्द का क्या संबंध है? इस जगह पर 'वृक्ष' या 'हाथी' शब्द का प्रयोग होना चाहिए।" प्रवचानकार को कुछ भी सूझता नहीं था, इसलिए वह भी उत्तर दे नहीं पाया। तब अवधूत ने कहा, "अगर वह शब्द (विद्युलता) 'वृक्ष' से संलग्न है ऐसा कहोगे तो वृक्ष की निश्चल स्थिति होने के कारण उस शब्द का प्रयोग यहाँ विरोधी होता है। उसी प्रकार 'हाथी' शब्द से 'विद्युलता' शब्द कैसे संलग्न हो सकता है?" सिद्धजी की बात सुनकर

प्रवचनकार मन में बोला की ये कोई पगला भवी बिलकुल नहीं, ये तो कोई असामान्य व्यक्ति है, फिर उसने कहा, "हे महात्मा, कृपा करके बताईए की 'विद्युलता' शब्द का दृष्टांत किस जगह देकर, यह संलग्नता व्यक्त की जा सकती है?" सिद्धनाथजी ने कहा, "चींटी से लेकर हाथी तक सभी प्राणी गतिशील हैं। उनके विचार रूपी ऐने में जीवात्मा ही प्रतिबिंबित होता रहता है। निश्चित ही यह शब्द उस जीवात्मा के वर्णन के लिए योग्य है। जिस प्रकार छाये हुए बादलों से एक पल के लिए बिजली कौंधकर सभी वस्तुओं पर प्रकाश फैलाती हुयी फिर बादलों में ही एकरूप हो जाती है, उसी प्रकार परमात्मा के समीप होते हुए, कल्पित बुद्धि में प्रतिबिंबित होने वाली आत्मा द्रष्टा, दृश्य और दृष्टि इस त्रिपुटी (तीन पुटों का वर्ग) का आभास कराती है, और अगले ही पल फिर से स्वरूप के साथ एकरूप हो जाती है। इसीलिए इस आत्मा (चिदाभास) की तुलना विद्युलता के साथ करना योग्य होगा।" ऐसा कहते हुए उन्होंने अपने हाथ में रखी हुए भाकरी प्रवचनकार के सिर पर रखी। प्रवचनकार ने उसे हाथ में लेकर ईश्वर के प्रसाद के समान सिर को लगाते हुए बार बार "मैं पापी हूँ" कहकर सिद्धानाथजी को प्रणाम किया। उसने सिद्धजी से कहा, "आप सचमुच ही ब्रह्मज्ञानी सतगुरुजी है, इसलिए मुझे काशी तीर्थ जाने की आज्ञा दीजिए।" उसपर महात्मा ने कहा, "जो काशी जाते हैं वे वापस नहीं आते, तुम क्यों काशी जाना चाहते हो?" उसने कहा, "मैं निश्चित ही जाने वाला हूँ।" सिद्धजी ने कहा, "ठीक है, अगर ऐसा ही है, तब तुम काशी जाना। वहीं तुम्हें मोक्षप्राप्ति होगी।" ऐसा आशिर्वाद पाकर वह तुरंत वहाँ से निकलकर काशी गया और जैसा कहा जाता है की कौवा बैठें और टहनी टूट जाए, उसी प्रकार वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

उसके पश्चात वह गाँव छोड़कर सिद्धनाथजी कीले से बाहर निकलते समय रात का तीसरा प्रहर होने के कारण अँधेरा छाया हुआ था। उस समय सामने से थानेदार कुछ सिपाहियों के साथ वहाँ आ पहुँचा और उसने सिद्धजी से पूछताछ की, परंतु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। थानेदार के मन में हमेशा चोरों के बारे में ही विचार होने के कारण, सिद्धजी चोर ही होंगे ऐसा समझकर, उसने सिपाहियों को उन्हें पीटने की आज्ञा की। उसकी आज्ञा के अनुसार सिपाहियों ने उन्हें यथेच्छ पीटा। बाद में उन्होंने सिद्धनाथजी को गाँव के बाहर निकाल दिया,

उस पर सिद्धनाथजी किसी मंदिर में जाकर वहाँ लुढ़क गये। जब प्रवचनकार को ये समाचार मिला, तब वह उन्हें खोजता हुआ वहाँ आया| उसने सिद्धनाथजी को फिर गाँव आने की बिनती करते ही उन्होंने उसे अस्वीकार करने के कारण गाँव से नैवेद्य मँगवाकर उन्हें देते हुए कहा, "हे गुरुवर्य, आपकी ये स्थिति देखकर आँखे बहने लगी हैं। दुर्धर प्रारब्ध आपके शरीर को इस प्रकार कष्ट पहुँचाते हुए मुझसे देखा नहीं जाता।" उस समय सिद्धनाथजी ने मन में सोचा की इससे पूर्व घटी हुई एक घटना की तुलना में यह घटना बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। उस समय बल्लारी (कर्नाटक राज्य का एक जिला) में स्थित एक मार्ग से जाते हुए जब वे एक घर के सामने खड़े हुए थे, तब प्रहरी ने उन्हें "अरे भैया, तुम कौन हो?" ऐसा पूछने के पश्चात जब उन्होंने उत्तर नहीं दिया, तब वह अत्यंत क्रोधित हुआ। उसने कहा, "परसो साहूकार के घर पर तुम्हीं ने डाका डाला, है न? मैं अच्छी तरह से जानता हूँ की आज तुम उसी घर को टोहने के लिए आए हो।" ऐसा कहकर प्रहरी ने उन्हें जोर से ढकेल दिया, जिससे वे एक पत्थर पर जाकर गिरे और उनका शरीर लहूलुहान हुआ। उन जखमों के व्रणोंपर हाथ फेरते हुए सतगुरुजी ने कहा, "मुझे इन बातों का यत्किंचित् भी दुख नही। सब से अलिप्त होकर रहने से प्राप्त होने वाला सुख लोगों के साथ रहकर कभी नहीं मिलता।" प्रवचनकार रातभर वहीं रहा| प्रात: सिद्धनाथ वहाँ से निकले तब प्रवचनकार ने उन्हें प्रणाम किया और वह अपने घर लौटा। अब अगले सुरस कथाओं से भरे अध्याय पर श्रोतागण ध्यान दें, क्योंकि सतगुरुजी का जीवन चरित्र सुनने से भाविक जनों को मोक्षमार्ग प्राप्त होता है। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह ग्यारवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥